बहुत कीमती हैं बनारस की यादें
जेहन में छुपाकर रखा है जी इनको
महफिल जुटे जब कभी फिर तो ऐसा है सोचा
सुनें कुछ और कुछ हम भी सुनावें

इंतजार होता था आए कोई खत या संदेशा
घर भागने को आतुर हमेशा
खानाबदोशों की तरह थे काटे सेमेस्टर
पर अबके लगा जीने लायक बस यही एक शहर
मंदिरों से और गंगाजी से जी भर पुण्य बटोरो
उम्दा ठंडई, लस्सी, रबड़ी सब है हाजिर चटोरो

पढ़ाई की बदौलत मिली डिग्री की कुंजी
मगर दौलत दोस्ती की बड़ी सबसे पूंजी
किसी इल्तेजा पर न कोई करेगा निराशा
बरसों का रिश्ता यही दे विश्वास

आदमी बनकर के निकले जो आए थे लड़के
कोई आरामतलबी तो कोई जगता था जी तड़के
ये खबर कि हर एक ने पाया बढ़िया मुकाम
दिल को सुकूँ दे मन को इत्मीनान

यहीं चेहरों पे उमर की परतें भले
पहचाना बखूबी और छूटते ही गले से मिले
फिर हुई यह प्रतिज्ञा कही अनकही
मिलना जारी रखेंगे हो सके तो फिर से यहीं

[illegible]

सत्र : 1983-87 बी. टेक (मैकेनिकल इंजी.)
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
2012 दिसम्बर में पुनर्मिलन कार्यक्रम से प्रेरित